Research Paper Hindi

सांख्यदर्शन में शरीरविज्ञान और देहव्यवस्था: एक अवलोकन

Sankhyadarshan ME Sharirvignan Aur Dehvyavastha : Ek Avalokan

DEBASHIS PANIGRAHI

ABSTRACT

सांख्यदर्शन आस्तीकदर्सने में गिना जाता है । इस दर्शन में शरीरविज्ञान अर्थात् शरीर सम्भन्धीतज्ञान वहत ही मार्जित रुपमें प्रकट किया है । इसमें सूक्ष्मशरीर, स्थूलशरीर, कर्मदेह ओर अतिवाहिकदेह का विचार किया है । कर्मानुसार मनमें संस्कार उत्पन्न होता है । यही संस्कार धर्मादि रुपमें वैकृतिक भाव बनता है और बाद में प्राकृतिक सांसिद्धिकभाव बनता है । यही सांसिद्धिकभाव अगर मलीन हो तो ही जीव पुनः शरीर प्राप्त करता है । सूक्ष्मशरीर नित्यभाव रुपसे सांसिद्धिकभाव युक्त रहता है । सूक्ष्मशरीर जो शरीर प्राप्त करता है वह स्थूलशरीर कहते हैं । जीवात्मा जिस कर्मरुपी भाव से विभिन्नलोक में शरीर धारण करता है उसे कर्मदेह का आख्या दिया है । कभी कभी जावात्मा का अकाल स्थूलशरीर नष्ट हो जाता है, उसी काल में प्रकृति पुनः एक वासनाशरीर प्राप्त करता है उसे सांख्यदर्शनमें अतिवाहिकदेह रुप में व्याख्या करते हैं ।

KEYWORDS

सुक्ष्मशरीर, स्थूलशरीर, कर्मदेह, अतिवाहिकदेह ।

परिचय–

सांख्यदर्शन का प्रणेता हैं कपिल मुनि । ये दर्शन आस्तीको में गिना जाता है । इसमें अन्य शास्त्रों कि तरह आत्मा परमात्मा आदि का वर्णन कुछ भिन्न तरिके से प्रस्तुत किया गया है । प्रकृति-पुरुष आदि के माध्यम से सारा वर्णन किया गया है । प्रकृति जो परिणामीनि गुणयुक्त तथा प्रधान है और पुरुष जो एकमात्र चैतन्य रुप है जो अनेक है । इस दर्शन में सबसे महत्त्वपूर्ण है शरीर विषयक ज्ञान । जब चैतन्यरुप जीवात्मा का सूक्ष्मशरीर ओर उसके बाद स्थूलशरीरप्राप्त करता है । ये सर्वजन विदित है कि शरीर हमारे सारे कर्मो का मूख्याधार है । शरीर के माध्यम से हम पुण्यापुण्यकर्मादि करते हैं । और अन्त में इसी शरीर के द्वारा हि मुक्ति मिलती है । विज्ञान ने तो इस शरीर के वारे में पुरा तत्त्व निकाल लिया है । आधुनिकविज्ञान से हमे न केवल शरीर में कौन कौन से तत्त्व है वल्की शरीर केसे जन्मसे विकसित होता है इसका सारा विषय आसानी से मिल जाता है । इसका विस्तृत विवरण हमारे प्राचीन आयुर्वेदिक शास्त्रो में भी मिलता है । अगर हम दर्शन कि दृष्टी से देखेगें तो सिर्फ सांख्यदर्शन में ही इस विषय मिलता है । इसलिये शरीर का महत्त्व दर्शन के दृष्टी से जानना हमारे लिये आवश्यक है ।

सांख्यदर्शन में शरीर का स्वरुप

दर्शनसास्त्र का मूल होता है आत्मा का मुक्ति होना परम आवश्यक है । यही मुक्ति के लिये अत्माको कुछ पुण्यकर्म करना पड़ता है । कर्म करने के लिये शरीर तो चाहिये, इसीप्रसंगमें कपिलमुनि ने इस विषय को स्पष्ट करते हुए एक सूत्र में कहा है कि –

तदधिष्ठानाश्रये देहे तद्वादः।।

आत्मा या पुरुष जिस को आधार करके संसारमें रहता है वह शरीर कहलाता है । ये आत्मा संसार में विभिन्न आकार को आश्रय करके रहता है जैसे पशु, पक्षी, नर, वानरादी अनेक । इन सबको हम शरीर कहते हैं । इस प्रसंग में यही प्रश्न उठता है कि अत्माको शरीर कहाँ से मिलता है । इसको एक और सूत्र में बताते हुए कहते हैं कि –

तस्माच्छशरीरस्य।।

इस सूत्र में कहा गया है कि जब पुरुष और प्रकृति (मूलप्रकृति) परस्पर समीप आते हैं तव दोनों के छाया दोनों के ऊपर पड़ता है (छायावाद) और यहाँ पुरुष सोचता है कि प्रकृति ने मुझे देखलिया है, यहीं पुरुष अज्ञानमें पड़कर जीवशरीर प्राप्त करता है । सूत्र में स्थित "तस्मात्" का यही अर्थ है । शरीर के बारे में कहते हैं कि महत् अहंकारसे विकृत होकर ये शरीर प्राप्त करता है ।

सांख्य में वर्णित विभिन्न शरीर

सांख्यदर्शन में न केवल एक शरीर के वारे में अपितु आत्मा सम्बन्धीत ऐसे वहत सारे शरीर के बारे में दर्शाया गया है ।जीव हमेशा त्रिविधदुःख से संपूर्ण निवृत्ति रुप अपवर्ग की प्राप्ति के लिये चेष्टा करता रहता है । ये दुःखनिवृत्ति विवेकज्ञान के द्वारा ही सम्भव है, और ज्ञान साधन शरीरके माध्यमसे ही होता है । सांख्यमें मूलतः सूक्ष्मशरीर और स्थूलशरीरइनदो शरीर के बारे में बताया गया है ।

सांख्यदर्शनमें सूक्ष्मशरीर

सूक्ष्मशरीर या लिङ्गशरीर का विषय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । चैतन्यरुप जीवात्मा जब संसार में पहले इस शरीर के साथ ही जन्म लेता है । इस शरीर के बारे में परिचय देते हुए कहा है कि –

सप्तदशैकं लिङ्गम् ।।

सूत्रानुसार सूक्ष्मशरीर में कुल 17 तत्त्वों का समावेश है । ये 17 तत्त्व इस प्रकार हैं 11 इन्द्रिय पञ्चतन्मात्रा ओर बुद्धि । सूक्ष्मशरीर के महत्त्व के बारे में वताया है कि स्थूलशरीर में जो विषयों का उपभोग करता जीव उसका सारे अनुभव सूक्ष्मशरीर करता है । स्थूलशरीर तो केवल विषयों का आस्वादन करता है । इसको प्रमाणित करते हुए सूत्र में कहा है कि –

बुद्धितत्त्वमेव मुख्यं लिङ्गम्।।

इस सूत्र में सूक्ष्मशरीरके मुख्य विषयों का प्रमाण देते हुए कहा है कि इन 17 तत्त्वों में बुद्धि श्रेष्ठ है । क्युंकि बुद्धिमें दोप्रकार के भाव होते हैं । एक तो सांसाद्धिका ओर दुसरा है वैकृतिका । इस वैकृतिका जो भाव हैं उसमें फिर दो प्रकार का भाव होता है जो सत्त्वाहंकार ओर तामसाहंकार से विकृत होता है । इन सारे भावों का नियन्ता बुद्धि है ओर वाहक इन्द्रियाँ । इसको प्रमाण देते हुए कारिका में दिया है कि –

सांसिद्धिकाश्च भावाः प्राकृतिका वैकृताश्च धर्माद्याः .... ।।

सत्त्वाहंकार से चारप्रकार के भाव आता है जो धर्म, ज्ञान, वैराग्य ओर ऐश्वर्य कहलाता है । तामसाहंकार से जो भाव उत्पन्न होते हैं अधर्म, अज्ञान, राग ओर अनैश्वर्य कहते हैं । इसके पुष्टी करते हुए कारिका में कहा है कि –

अध्यवसायो बुद्धिर्धर्मो ज्ञानं विराग ऐश्वर्यम् ।
सात्त्विकमेतद् रूपं तामसमस्माद्विपर्यस्तम् ।।

तो इस तरह सूक्ष्मशरीर के बारे में सप्तदश तत्त्वों से निर्मित ये शरीर ऐसा प्रमाण उपनिषद् में भी मिलता है । यथा –"तासु एवंविद्यासु नाडीषु सूक्ष्मासु बालग्रहसहस्रभेदपरिमाणासु शुक्लादिरसपूर्णासु सकलदेहव्यापिनीषु सप्तदशैकं लिङ्गं वर्तते " ।(वृहद्.उ.पृ.961) परन्तु कुछ दार्शनिक इस सूक्ष्मशरीरको अष्टादशतत्त्वसंपन्न मानते हैं । उनकी ये तत्त्व को निराधार वताते हुए आचार्य विज्ञानभिक्षु ने बताया कि –

कर्मात्मा पुरुषो यौऽसौ बन्धमोक्षैः प्रयुज्यते ।
ससप्तदशकेनापि राशिना युज्यते च सः ।।

अर्थात्, ये जो सूक्ष्मशरीर है इसमें सतरह ही तत्त्व रहते हैं । परन्तु विज्ञानभिक्षु का ये मत उन सतरहतत्त्व से थोड़ा भिन्न मिलता है । इनके मत में पञ्चज्ञानेन्द्रिय, पञ्चकर्मेन्द्रिय,पञ्चप्राण, बुद्धि और मन है । इसकी स्थिति के बारेमें पुष्टी करते हुए विज्ञानभिक्षु कहते हैं कि, ये सूक्ष्मशरीर महासर्ग (सृष्टी प्रारम्भ) से लेकर महाप्रलय पर्यन्त रहता है । जैसे – विशेषाणां मध्ये एते नियताःनित्याः।

सांख्यदर्शनमें स्थूलशरीर

कोई भी तत्त्व हो वह बिना किसी आधार के ठहर नहीं सकता । सूक्ष्मशरीर जैसा भी हो स्थूलशरीर के बिना कुछ कर नहीं सकता । इस बात को कालिदास ने शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् इस न्याय से कर दी है । अतः स्थूलशरीर का महत्त्व समझते हुए कपिलमुनि ने उसका परिचय देते हुए कहा है कि –

पाञ्चभौतिको देहः ।।

अर्थात्, ये जो जीव के स्थूलशरीर हे वह पृथ्वी, जल, तेज, वायु ओर आकाश तत्त्ववाला पाञ्चभौतिक सब मिलकर ही इस शरीर का निर्माण करते हैं। सूत्र के अनुसार सारे पाञ्चतत्त्व हमेशा शरीर के साथ रहते हैं। परन्तु इस मत का कदाचित् कुछ सांख्याचार्यों द्वारा इसका सर्वोमान्य नहीं होता, इसको बताते हुए अपनी अगले सूत्र में कहते हैं कि –

चातुर्भौतिकमित्येके ।।

कुछ विद्वानो नें स्थूलशरीरको पाञ्चभौतिक न मानकर चार भूतवाला मानते हैं । उनके मत में "शब्दगुणकमाकाशम्। तच्चैकं विभू नित्यं च " (त.सं. पृ.9) अर्थात् आकाश नित्य होने के कारण कदाचित् शरीर का उपादान नहीं हो सकता। इसके बाद पुनः स्थूलशरीर के उपादान के बारे में चर्चा करते हुए कहते हैं कि –

ऐकभौतिकमित्यपरे।।

ये जो स्थूलशरीर है उसमें केवल एक ही उपादान नित्य है और बाकी सब उपष्टम्भक हैं। इस सूत्र में स्पष्ट किया गया है कि जल, तेज, वायु ओर आकाश ये चार उपादान या तत्त्व शरीर में नित्य नहीं रहते। ये सब शरीर में आते जाते रहते हैं। इस तरह स्थूलशरीर में स्थित उपादान के बारे में विश्लेषण ओर करते हुए आगे कहते हैं कि –

न पाञ्चभौतिकं शरीरं बहुनामुपादानायोगात् ।।

न सिर्फ ये तत्त्व वल्की और बहत सारे उपादान हैं जो स्थूलशरीर के लिये अयोग्य हैं। इस सूत्र के माध्यम से कहते हें कि जैसे वस्तु सजातीय उपादान से बनता है वैसे ही शरीर के लिये पृथ्वीमात्र सजातीयतत्त्व हो सकता है, अन्य नहीं। इसके परान्त जीतने भी उपादान हैं वे सब शरीर के लिये विजातीय हैं । अतः स्थूलशरीर में नित्य रुप में पृथ्वीतत्त्व ओर बाकी सब उपष्टम्भक हैं।

मातापितृजं स्थूलं प्रायश इतरन्न तथा।।

इस सूत्र माध्यम से कहा गया है कि माता ओर पिता के मिलन से जो शरीर हम प्राप्त करते हैं वह ही स्थूलशरीर है। इस तरह से सांख्यदर्शनमें स्थूलशरीर का वर्णन मिलता है।

सांख्यदर्शनमेंवर्णित देहव्यवस्था

उपरोक्त तथ्यों से ज्ञात हुआ कि सूक्ष्मशरीर ही स्थूलशरीर प्राप्त करता है । परन्तु इसका कोई कारण होगा। हम जानते हें कि बिना किसी कारण के कार्य असम्भव है। इसी विषय के ऊपर को आलोचना करते समय कपिलमुनी ने कर्मदेह नामक एक और शरीर कि बात करते हैं। कर्मदेह का परिचय प्रदान करते हुए सूत्र में कहा है कि –

त्रिधा त्रयाणां व्यवस्था कर्मदेहोपभोगदेहोभयदेहाः ।।

इस विषय को आगे बढाते हुए कर्म के बारे में विशेष विवरण प्रदान करते हैं। जब जीवात्मा संसार में जन्म लेता है, तो उसे वहत सारे कर्म करने पड़ते हैं। इस बात को स्पष्ट करते हुए गीतामें कहागया है कि

सत्त्वरजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः ।
निवन्धन्ति महावाहो देहे देहिनमव्ययम् ।।

यहाँ कहा गया है कि सत्त्व, रज ओर तम प्रकृति के ये तीनगुण जीव संसारमें जन्म लेते ही अपने माया से बान्धते हैं। जिसपर जीव आवध होकर पुण्यकर्म तथा पापकर्म करता है। जीव को इस पुण्यापुण्यकर्मो के द्वारा ही विविध लोक प्राप्त होते हैं। इस बात को कारिका में भी कहा है कि –

धर्मेण गमनमूर्ध्वं गमनमधस्ताद्भवत्यधर्मेण ।।

जीव की इसप्रकार की गति के बारे में और भी स्पष्ट करते हुए ओर भी देखा गया है कि जीव जो कर्म करता है उससे चित्त शुद्ध होकर पुण्यफल प्राप्त करता हुआ विविध लोक प्राप्त करता है। जैसे –

शुभैराप्नोति देवत्वं निषिद्धैर्नारकीं गतिम् ।
उभाभ्यां पुण्यपापाभ्यां मानुष्यं लभतेऽवशः ।।

इस श्लोकमें प्रमाणित किया है की कर्म के अनुसार जीव को उर्ध्वलोक तथा अधलोक प्राप्त होते हैं। जीव जो विभिन्न कर्मो के कारण विभिन्न लोक में शरीरप्राप्त करता है उसे ही कर्मदेह कहा है।

सांख्यदर्शनमें इसी देह को कर्मदेह, उपभोगदेह ओर उभयदेह रुप से तीन भागों में विभक्त किया गया है। ये कर्मदेह सारे जीवों के लिये समान है जीससे वे सब अपना अपना कर्म कर सकें। उनमें एक ओर विशिष्टता दिखाते हुए कहा है की –

न देहमात्रेणैव कर्माधिकारित्वं वैशिष्ट्यश्रुतेः ।।

सिर्फ शरीर मिलने से ही नहीं होता, कर्म साधने के लिये अहंकार रहित मन कि आवश्यकता होती है। जैसे –

यत्कर्मको हि यो भावो नाऽसौ तत्कर्तृको यतः।
घटप्रत्ययवत्तस्मान्नाहं स्याद् द्रष्टुकर्मकः ।।

इसके विपरित जो जीवात्मा ईप्सित इच्छा रखते हुए कर्म करते हैं, वे जब दुसरी लोक में देवता यक्ष, किन्नर,पशु,पक्षि,सरीसृपादि शरीर प्राप्त करते हैं उनकी वह शरीर भोगदेह कहलाता है। इसका कारण यह है कि पुण्यपापादि कर्मो का फल जब समाप्त होता है तो फिर इस लोक पर जन्म लेते हैं। उभयदेह में हमारा नर शरीर आता है जहाँ पर हम अपने पूर्वकृतकर्मो का फल भोगते हुए अपनी भावीजन्म के लिये कर्ममें रत रहते हैं।

सांख्यमे वर्णित अतिवाहिकदेह

प्रस्तूत विषयों मे से हमें ज्ञात होता है कि जीवात्मा अपने कर्मानुसार विभिन्नलोक को प्राप्त करता है। सांसाद्धिकभावरुप में सूक्ष्मशरीर बनके समय आने पर स्थूलशरीर प्रप्त करता है। परन्तु कदाचित् देखागया है कि समय से पूर्व ही कुछ जीवों का अन्त होता है। अस्वभाविकमृत्यु के कारण सूक्ष्मशरीर स्थूलशरीर छोड़ता है। उन परिस्थिती में आत्मा न तो सूक्ष्मशरीर पूर्णरुप से बन पाया न ही स्थूलशरीर उसके पास है। इस समस्या का समाधान करते हुए सांक्य में एक ओर देह की चर्चा की है और वह है अतिवाहिकदेह। आत्मा के इस रुप को सामान्य तौर पर भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस आदि नामें से जाना जाता है। संसार में इनका भी प्रमाण मिलता है, इससे इस बात की पूष्टी कि जाती है ।

अतिवाहिकदेह के प्रमाण

"येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके..." नचिकेता के इस प्रकार की शंका सामान्य है। इस प्रकार अतिवाहिकदेहका प्रमाण देते हुए सूत्र में कहा है कि –

न स्थूलमितिनियम अतिवाहिकस्यापि विद्यमानत्वात् ।।

साधारण रुप में इस सूत्र में कहा गया है कि स्थूलशरीर को हम प्रत्यक्ष में अनुभव करते हैं। लेकिन् इसका ये अर्थ नेहीं जो वस्तु प्रत्यक्ष न हो वो नहीं है। कहने का अभिप्राय ये है कि सिर्फ स्थूल ऐसा नियम नहीं वल्की हमारे अ प्रत्यक्ष रुप में भी अनेक वस्तु हे जिसको हम प्रत्यक्ष रुप से अनुभव नहीं कर सकते। सूत्र में अपि शब्दसे सूक्ष्मशरीर जैसा एक अतिवाहिकशरीर है। जो हम अनुमानप्रमाणसे जान सकते हैं । जैसे –कदाचिद् वायवीयशरीरप्रवेशतो गमनकालेऽपि भोगो भवति ।।

अतिवाहिकदेह का परिचय

अतिवाहिकदेह का परिचय प्रदान करते हुए विष्णुपुराणमें कहा गया है कि -

तत्क्षणादेव गृह्णाति शरीरमातिवाहिकम् । ऊर्ध्वं व्रजन्ति भूतानि त्रीण्यस्मात् तस्य विग्रहात् ।।

अतिवाहिकसंज्ञोऽसौ देहो भवति भार्गव। केवलं तन्मनुष्याणां नान्येषां प्राणिनां क्वचित् ।।

इस श्लोक में अति महत्त्वपूर्ण विषयको प्रकाश करते हुए कहा है कि मृत्यु के तुरन्त बाद ही जीवको जो शरीर प्राप्त होता है वह अतिवाहिकदेह है। ये शरीर केवल मनुष्यको ही मिलता है। क्युंकि मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो विवेक अनुसार धर्माधर्मक्रिया करता है। इस योनि में जीव कैसे रहता है इसको बताते हुए कहा है कि –

आकाशस्थो निरालम्बो वायुभूतो निराश्रयः ।
इदं नीरमिदं क्षीरं स्नात्वा पीत्वा सुखी भव ।।

जीवात्मा अतिवाहिकदेह के रुप में वायु को आश्रित हो कर रहता है।

उपसंहार

सांख्य शास्त्रमें शरीरविज्ञान कि दृष्टी से बहत ही महत्त्वपूर्ण विषयों का उल्लेख मिलता है।सप्तदश उपादानयुक्त सुक्ष्मशरीर का वर्णन जिसमें एकादश इन्द्रियाँ पञ्चतन्मात्रा ओर बुद्धि को मिलाकर सुक्ष्मशरीर बनता है। इस सुक्ष्मशरीर में सांसाद्धिक भाव रहता है जो जीव का पुनर्जन्ममें माध्यम होता है। स्थूलशरीर में ही सूक्ष्मशरीर सारे विषयों को भोगता है। इसलिये स्थूलशरीर का महत्त्व सारे कर्मो का जड माना है। स्थूलशरीर का स्थायी उपादान के रुप में एक ही तत्त्व पृथ्वी को ओर बाकी सारे वायु, जल, अग्नि ओर आकाश को उपष्टम्भक के रुप में माना है। इसके अलावा जीव को अपने कर्मानुसार जो परलोक में शरीर मिलता है उसे देह मानते हुए कर्मदेहोपभोगदेहोभयदेह रुप में तीन भागो में विभाजित किया है। उसके बाद आकस्मिक मृत्यु हो जाने पर जीव को जो शरीर मिलता है उसकी पुष्टि करते हुए अतिवाहिकदेह का नाम दिया है। जो जीवात्मा का अत्यन्त कष्टप्रद समय होता है। इस तरह सांख्यदर्शन में शरीरविज्ञान सम्बन्धीत विषय ओर देह का व्यवस्था किया गया है। जो मानव समाज के लिये एक अद्वितीय सोच है।

REFERENCES

1. सांख्यदर्शन जनार्दनशास्त्री पाण्डेय मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन,जवाहर नगर दिल्ली 2 | 1989. सांख्यदर्शन प्रवचनभाष्य डॉ. रामशंकर भट्टाचार्यः भारतीय विद्याप्रकाशन दिल्ली 3 | 1994. सांख्यतत्त्वकौमुदी डॉ. ओमप्रकाश पाण्डेय चौखम्बा कृष्णदास अकादमी वाराणसी 4 | 1981. श्रीमद्भगवद्गीता श्रीकृष्णदास गोयन्दका गीताप्रेस गोरखपुर 5 | 2012. कठोपनिषद् श्रीकृष्णदास गोयन्दका गीताप्रेस गोरखपुर 6 | 2006. नैष्कर्म्यसिद्धी प्रेमवल्लभत्रिपाठी शास्त्रि चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान जवाहर नगर दिल्ली 7 | 2007. कल्याण- पुनर्जन्म एवं परलोक विज्ञान हनुमान प्रसाद पोद्धार गीताप्रेस गोरखपुर 2004 | |